

नवभारत

| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी

| प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

नशामुक्ति ; संकल्प को जनआंदोलन बनाना होगा

के बड़े हिस्से को नक्सल हिंसा से मुक्त कराने में उनके नेतृत्व और रणनीति की महत्वपूर्ण भूमिका रही है . इसलिए जब शाह किसी लक्ष्य के लिए समय सीमा तय करते हैं तो उसके पीछे महज घोषणा नहीं, बल्कि उसे हासिल करने की कार्ययोजना भी होती है. मध्यप्रदेश के नशामुक्ति अभियान में भी इसी दृढ़ता और निगरानी की अपेक्षा स्वाभाविक है.

नशे के खिलाफ लड़ाई का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष ड्रग नेटवर्क की कमार तोड़ना है. संगठित ड्रग सिंडिकेट, तस्करों और अवैध उत्पादन केंद्रों पर कठोर कार्रवाई के साथ गुप्त प्रयोगशालाओं को नष्ट करना जरूरी है. प्रदेश में अब तक 17 ऐसी प्रयोगशालाओं का भंडाफोड़ होना बताता है कि समस्या कितनी

गंभीर है . आदतन अपराधियों और तस्करों के खिलाफ टीईटी – एनडीपीएस जैसे कठोर कानूनों का इस्तेमाल भी इसी अभियान का हिस्सा है. लेकिन केवल गिरफ्तारी और सजा से नशे की मांग समाप्त नहीं होगी.

नशे की समस्या का दूसरा और अधिक चुनौतीपूर्ण पक्ष है युवाओं को इसकी चपेट में आने से रोकना . शैक्षणिक संस्थानों में ‘ड्रग फ्री कैंपस’ की व्यवस्था, एंटी–नारकोटिक्स टास्क फोर्स की सक्रियता और नशे की गिरफ्त में आ चुके युवाओं के पुनर्वास को अभियान का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा. स्कूल और कॉलेजों में जागरूकता कार्यक्रम केवल औपचारिक आयोजन न बनें, बल्कि बच्चों की बदलती आदतों और व्यवहार पर नजर रखने की व्यवस्था भी विकसित हो .यहां अभिभावकों

की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है. बच्चे के व्यवहार में अचानक बदलाव, गलत संगत, अकेलापन या असामान्य खर्च जैसी बातों को नजरअंदाज करना भविष्य में बड़ी समस्या का कारण बन सकता है. परिवार को बच्चों से संवाद बढ़ाना होगा. सामाजिक और धार्मिक संगठनों, स्वयंसेवी संस्थाओं, शिक्षकों और युवाओं के संगठनों को भी इस अभियान में सक्रिय भागीदारी करनी होगी.

सरकार ड्रग माफिया के खिलाफ कठोर कार्रवाई कर सकती है, कानून लागू कर सकती है और पुनर्वास की व्यवस्था कर सकती है, लेकिन समाज ही नशे की मांग को खत्म कर सकता है. इसलिए अभित शाह के 2029 के संकल्प को सरकार बनाम नशा नहीं, बल्कि सरकार और समाज बनाम नशे की लड़ाई बनाना होगा. तभी मध्यप्रदेश को वास्तव में नशामुक्त बनाने का यह संकल्प स्थायी सफलता में बदल सकेगा .

बंगाल में तार्किक विसंगति, अमान्य का शिगूफा



राजीव खंडेलवाल
लेखक, क्रा सलाहकार एवं पूर्व अध्यक्ष, वैतुल सुधार न्यास

बिहार के बाद एसआईआर पश्चिम बंगाल पहुँचा, जहां मतदाता सूची का विवाद और गहरा गया. यहाँ बहस का विषय डेटा–मिलात, तकनीकी प्रणाली, नोटिस और निर्णय लेने की

प्रक्रिया तक विस्तारित हो गई.

मतदाता सूची बनाने के लिए न्यायिक अधिकारियों की नियुक्तियाँ. असाधारण स्थिति- पश्चिम बंगाल में एसआईआर के दौरान ‘तार्किक विसंगति’ और ‘अमान्य’ जैसी दो नई श्रेणियाँ सामने आईं. असाधारण परिस्थितियों के उत्पन्न होने से फरवरी 2026 में सुप्रीम कोर्ट ने इस प्रक्रिया के अंतिम चरण में ‘तार्किक विसंगति/ अमान्य’ श्रेणी से जुड़े मामलों की जाँच/ सहायता के लिए ‘न्यायिक अधिकारियों’ की व्यवस्था की. देश के इतिहास में यह पहली बार हुआ. क्या आगे भी इसी प्रकार असाधारण परिस्थितियों में न्यायिक अधिकारियों को अन्य कार्यों में लगाया जायेगा ? जिस प्रकार ‘शिक्षक’ को मूल कार्य से हटाकर हर कोई कार्य से (जनगणना से लेकर मिड डे मील तक) लगा देने की प्रवृत्ति हमारे देश में प्रचलित है. क्योंकि हमारे देश में असाधारण स्थितियाँ

संवैधानिक संस्थाओं द्वारा वैधानिक नृुतियां

. चुनाव आयोग से लेकर उच्चतम न्यायालय तक ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया की अंतिम सूची के प्रकाशन के पूर्व तक समस्त दावे–प्रतिदावे हैं, को निपटाने का दायित्व चुनाव आयोग का है . यदि समय की कमी के कारण निपटारा नहीं हो पाता है, तो चुनाव आयोग के पास दो ही विकल्प रहते हैं . या तो पुरानी मतदाता सूची के आधार पर चुनाव कराया जाए अथवा उन सब विवादित मतदाताओं को अंतिम निर्णय होने तक वोट करने दिया जाए . दुर्भाग्यवश ये दोनों वैधानिक नृुतियां दोनों ही संवैधानिक संस्थाओं चुनाव आयोग एवं उच्चतम न्यायालय ने की हैं . यह आँख रहित अंधा बनना है .

कभी भी पैदा हो जाती है ?

पश्चिम बंगाल चुनाव: चुनावी प्रणाली पर कितना विश्वास बढ़ा ?– आंकड़े खुद कहानी कहते हैं. लगभग 27.16 लाख मतदाताओं के नामों में से लगभग 22 लाख (82%) लोगों द्वारा अपील की गई. अभी तक हुई सुनवाई के पश्चात दिये निर्णयों में लगभग 93% मतदाताओं को बहाल कर दिया गया. क्या यह मजका नहीं है कि उक्त तथाकथित शक्ति मतदाताओं में से सिर्फ 1667 मतदाताओं ने ही (ट्रिब्यूनल के आदेश के बाद) मताधिकार का प्रयोग चुनाव में कर सके ? ट्रिब्यूनल द्वारा लगभग 93% नाम गलत हटाये जाने के सिद्ध होने से प्रारंभिक प्रक्रिया की शुद्धता पर प्रश्न क्यों न उठे ? न्याय का ताकाजा है कि उच्चतम न्यायालय द्वारा समस्त मतदाताओं का मत देने का अधिकार क्यों नहीं देना चाहिए था ? जब तक कि अंतिम रूप से उनका नाम

मतदाता सूची से हटा नहीं दिये जाते ? न्यायिक सिद्धान्त है कि एक आरोपी तब तक निरपराधी है, जब तब उसे न्यायिक प्रक्रिया द्वारा दोष सिद्ध न हो. मतदाता सूची अपराधिक मामला नही, पर क्या उक्त सिद्धान्त सर्वोच्च न्यायालय द्वारा यहां पर लागू नहीं किया जाना चाहिए? क्योंकि अंतिम रूप से नाम हटाये बिना, नागरिक का मताधिकार जो उसकी *‘अमूल्य संपत्ति’* है, की रक्षा हर हालत में की जानी चाहिए, जो संवैधानिक व्यवस्था ही है.

संवैधानिक प्रावधान– यदि कोई नागरिक जिसका नाम ड्राफ्ट सूची में नहीं आया है और वह स्वयं को पात्र मान कर अपील करता है और उसका मामला अंतिम रूप से तय नहीं हुआ, तो चुनाव के समय उनके मताधिकार की स्थिति क्या होनी चाहिए ? प्रावधान बिल्कुल स्पष्ट हैं–

लोग प्रत्येक अधिनियम 1950 की धारा

बेरोजगारों के लिए जापान में अवसर

बेरोजगारी की समस्या से जुझते भारतीय युवाओं के लिए सुयोदय का देश जापान जीवन में प्रकाश ला सकता है . अपनी योग्यता व हुनर के साथ उन्हें जापानी भाषा सीखनी होगी तभी उन्हें वहां नौकरी–रोजगार मिल सकता है. जापान बूढ़ों का देश बन गया है . वहां 95 वर्ष से अधिक आयु के इतने लोग हैं जितने वहां साल भर में बच्चे भी पैदा नहीं होते . जवान आबादी में भारी कमी आने की वजह से वहां विदेशियों को काम देना पड़ रहा है . जापान में 4.4 लाख कुशल विदेश श्रमिक कार्यरत हैं . जापान की 68 फीसदी फर्म ने विदेशियों को इसलिए नियुक्त किया क्योंकि वहां पर्याप्त जापानी कर्मचारी उपलब्ध नहीं हैं . स्वास्थ्य सेवा और मैनुफैक्चरिंग में भी जापानी कर्मियों की भारी कमी हो गई है . 2030 में आईटी में 8 लाख लोगों की जरूरत पड़ेगी . अभी जापान में वियतनामी, इंडोनेशियाई और म्यांमार के लोग काम कर रहे हैं . कुछ लोग नेपाल से भी गए हुए हैं . आगे चलकर जापान में विदेशियों की आबादी बढ़कर 11 प्रतिशत तक पहुंच सकती है . युवा व कार्यक्षम लोगों की भारी कमी की वजह से जापान की योजना लाखों आईई

रोबोट बनाने की है लेकिन इसमें भी दिक्कत है क्योंकि जापान के सिर्फ 8.4 प्रतिशत लोग एआई का इस्तेमाल जानते हैं जबकि अमेरिका की 50 प्रतिशत आबादी एआई के इस्तेमाल में माहिर है. जापान की विवशता है कि वहां दशतों में युवा कर्मचारी न मिलने से अनुभवी बुजुर्गों को रखा जा रहा है . वहां अधिक संख्या में



विदेशी कार्यबल की मांग है लेकिन इसके लिए जापानी भाषा बोलना व लिखना आना आवश्यक है. इससे पता चलता है कि जब युवा आबादी कम हो जाती है तो किसी देश के सामने कैसी चुनौती उत्पन्न होती है. इस समय भारत के श्रमिक बड़ी तादाद में खाड़ी देशों में कार्यरत हैं . इनमें बड़ी संख्या केरल के लोगों की है . ईरान युद्ध के बाद से इन लोगों की रिंता बढ़ गई है . जो भारतीय युवा रूस गए उनमें से कितने ही जबरन सेना में भर्ती कर यूक्रेन से लड़ने के लिए युद्ध के मोर्चे पर भेज दिए गए . जो युवा डकी रुक से रोजगार के लिए अमेरिका गए थे उन्हें थकड़ी–बेड़ी से जल्द कर भारत वापस भेज दिया गया . ऐसी हालत में युवा वर्ग जापानी भाषा सीखकर जापान में नौकरी पाने का प्रयास कर सकता है .

संपादकीय बोर्ड

| प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर

12398

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	5	6
7		8		9	
10	11		12		
		13			
	14				15
	16				17
18			19	20	
21		22			

बाएं से दाएं

1. उत्पात, हलचल, दंगा-फसाद 4. राक्षस, नीच प्रवृत्ति वाला पुरुष 7. पत्नी, रखने वाला, सुलामी, फांसी 8. सुई का वह छेद जिसमें डोरा पिरोया जाता है, ताश का एक्का, कौड़ी 9. नाखून 10. जो किसी का गुप्त भेद या राज जानता हो 12. बरदाश्त करना, झेलना, धार वहन करना 13. उपजाऊ भूमि (सं.) 14. वह जो कृपा के योग्य हो, वह जिस पर कृपा हो. 16. गरम. 17. माता, अम्मा, पार्वती (सं.) 18. जीभ, जिब्बा, भाषा 19. जब तब, कभी-कभी 21. लकड़ी-घसे आदि की दुकान 22. झरोखा, छिड़की (सं.)

ऊपर से नीचे

1. दृष्ट्यंत, मिसाल 2. जिससे आगे या अधिक और कुछ न हो, सर्वश्रेष्ठ 3. वन में उत्पन्न होने वाला पदार्थ 5. सोने के रंग का स 6. अपने अधिकार में लेना, नियुक्त करना, संग्रह करना, धरना 11. भारत के एक राष्ट्रपति 12. सब जगह, हर जगह 13. उष्कट्या, किसी चीज को ग्रहण करने के लिए उसकी योग्यता 15. लम्बा चोगा, रूई का बड़ा कोट 16. उपान, आवेश, खौलकर ऊपर उठना 17. चिन्ह करना, चित्र बनाना 18. लट के रूप में गुंथे हुए सिर के बड़े देवता 20. देने योग्य धन, दातव्य, दान, दायित्व

Solution 12397

उ	प	नि	वे	श	गो	रा
मै	न	का		क	री	ब
श	वा	स	न	झ	र	ना
		ड़ी		वों	ना	प
सं		च	दा	ई		तो
क	च	रा		मा	ला	मा
ल		च	म	न	या	
न	फ	र	त		प्र	जी
					श	

Solution 12397

उ	प	नि	वे	श	गो	रा
मे	न	का	क	री	ब	
श	वा	स	न	झ	र	ना
	ड़ी	बो		ना		प
सं	च	डा	ई		तो	
क	च	रा	मा	ला	मा	ल
ल	च	म	न	या		
न	फ	र	त	प्र	वी	ण

विंध्य की डायरी



प्रदेशाध्यक्ष का दौरा या नए राजनीतिक समीकरणों की तलाश



डॉ. रवि तिवारी

कई मायनों में खासा राजनैतिक महत्व रखता है. जानकारों का कहना है कि पार्टी के अंदर चल रही खींचतान की जानकारी प्रदेश और देश का नेतृत्व कर रहे नेताओ के पास है. चुनाव के पहले कार्यकर्ताओं और नेताओं के बीच पनप रहे असंतोष को खत्म करने व संगठन का दायित्व संभाल रहे नेताओ के मूल्यांकन का वक्त आ रहा है. इसके साथ हाल में हुई राजनैतिक नियुक्तियों से लोगो में जो मतभेद पैदा हुए हैं , उसका भी आंकलन किया जाना शेष है. ऐसा माना जा रहा

है कि श्री खण्डेलवाल की यात्रा के बाद कुछ लोगो को संगठन में नए सिरे से जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है. हालांकि प्रदेशाध्यक्ष के आगमन को लेकर जिला संगठन विशेष सतर्क हैं. इसके पूर्व भी उनका कार्यक्रम बारिश के कारण कुछ दिनों पहले रद्द हो चुका है. बताया यह भी जा रहा है कि श्री खण्डेलवाल अपनी इस यात्रा के दौरान समाज को साधने का प्रयास भी करेंगे

इसके पहले यह जिम्मा पूर्व मंत्री उमाशंकर गुसा को सौंपा जाता था.पिछले कुछ समय से उनका विंध्य दौरा कुछ कम हुआ है.

सांसद पुत्र की सियासत का पहला पायदान

सांसद पुत्र सरपंच पद का उप चुनाव जीत कर सियासत के पहले पायदान पर अपना पैर रखने में कामयाब हो गये . रीवा सांसद पिता जनार्दन मिश्रा से अनबन और घर से निकाले जाने के दावे के बाद भी अपने दम पर चुनाव लड़ना और प्रस्तावक विवाद में कलेक्ट्रेट में मौन धरने पर बैठने से लेकर जीत तक का सफर सुखियों में रहा .हिनौता ग्राम पंचायत के सरपंच उपचुनाव का परिणाम आया .इस चुनाव में रीवा सांसद जनार्दन मिश्रा के पुत्र अंकुर मिश्रा ने अपने प्रतिद्वंदी को 366 वोटों के बड़े अंतर से हराकर जीत दर्ज की है .यह जीत कोई सामान्य जीत नहीं कही जा सकती . यह जीत इसलिए भी खास है क्योंकि अंकुर मिश्रा ने यह चुनाव बिना किसी बड़े सहारे और अपने दम पर लड़ा .पूरे चुनाव के दौरान वे साइकिल से प्रचार करते नजर आए थे .युनाव शुरू होते ही यह उपचुनाव पिता -पुत्र के मतभेदों को लेकर सुखियों में आ गया था .अंकुर ने आरोप लगाया था कि पिता उनसे नाराज हैं और उन्होंने उन्हें घर से निकाल दिया है . करीब 15 दिनों से पिता से बात नहीं होने की बात भी उन्होंने कही थी .वह लगातार कहते रहे कि उन्हें सांसद का बेटा न समझा जाए, वे एक आम आदमी की तरह चुनाव लड़ रहे हैं . उन्होंने कहा था कि उनके पिता उनके प्रचार में नहीं आएंगे और अपनी लड़ाई खुद लड़ी और जीत दर्ज की . इस चुनाव में सबसे बड़ा मोड़ तब आया जब अंकुर ने अपने चुनावी प्रस्तावक का अपहरण कर दबाव बनाने का आरोप लगाया . इसी मामले में कार्रवाई की मांग को लेकर 2 अक्टूबर गौधी जयन्ती को वे रीवा कलेक्ट्रेट में मौन धरने पर बैठ गए थे . तब उन्होंने कहा था कि पिता अगर एक फोन कर दें तो पूरा मामला सुलझ सकता है . इस धरने के बाद प्रशासन ने जांच का आश्वासन दिया था और अब चुनाव में उनकी जीत ने सभी चर्चोंपर विराम लगा दिया है .अब सांसद जी के राजनीतिक उत्तराधिकारी के रूप में लोग देख रहे है .



निशानेबाज

न कोई गिनती और न पहाड़ा, बस तीन तिगाड़ा–काम बिगाड़ा

पड़ोसी ने हमसे कहा, ‘निशानेबाज, हमें राज कपूर की पुरानी फिल्म ‘आवारा’ का गाना याद आ रहा है जिसके बोल थे– एक दो तीन, आजा मौसम है रंगीन !’

हमने कहा, ‘आपको इससे आगे की गिनती सीखनी है तो फिल्म ‘तेजाब’ में माधुरी दीक्षित के डांस वाला गीत सुनिए जिसमें गिनती 13 के आंकड़े तक जाती है. वह पंक्ति है– तेरा करूँ गिन–गिन के इंतजार, आजा पिया आई बहार !’

पड़ोसी ने कहा, ‘निशानेबाज, आंकड़ा चाहे 3 का हो 13 का, इसे लेकर कहावत है– तीन बुलाए तेरह आ, डालो दाल में पानी ! ज्यादा लोगों को जिमाना या खिलाना हो तो ऐन मौके पर दाल की मात्रा इसी तरह बढ़ाई जाती है. ’

हमने कहा, ‘इस समय 3 सदस्यों का चुनाव आयोग चर्चा में है. इसके 2 सदस्यों सुखबीर सिंह व विवेक जोशी के मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेशकुमार से मतभेदों की खबर छपी थी. अपने दोनों सहयोगियों के परामर्श को ज्ञानेशकुमार ने नहीं माना. क्या इसे तीन तिगाड़ा काम बिगाड़ा कहा जाए ? चाहे तो 3 तिकत महाविकट भी कह सकते हैं. ’



पड़ोसी ने कहा, ‘निशानेबाज, यदि 3 के फिगर या आंकड़े पर गौर करें तो सृष्टि में उसका बहुत महत्व है. ब्रम्हा, विष्णु, महेश त्रिदेव कहलाते हैं. 3 लोक हैं– मृत्युलोक, स्वर्ग और नर्क. शिव जब तीसरी आंख खोलते हैं तो प्रलय हो

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में भाईयों के सहयोग से अचल संपत्ति में वृद्धि होगी. दाम्पत्य जीवन सुखमय मधुतापूर्ण रहेगा. वर्ष के मध्य में कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी.सहकर्मियों की मदद रहेगी. वर्ष के अन्त में व्यवसाय में अनिश्चय की स्थिति का सामना करना पड़ेगा. आजीविका के क्षेत्र में अनावश्यक चिन्ता रहेगी. शत्रु पर विजय मिलेगी.

मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी. वृष और तुला

राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन मधुरतापूर्वक रहेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों का शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यों में विवाद होगा, मन व्यथित रहेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अधिकारियों से मेल मिलाप होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना हितकर रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को समय अनुकूल एवं लाभदायक रहेगा.

मेघ– मित्रों से कहासुनी हो सकती है, सहकर्मि नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं, श्रम प्रयास से अभीष्ट की प्राप्ति होगी, नौकर चाकरों का सहयोग मिलेगा, **वृषभ**– पारिवारिक योजना में परिवर्तन होगा, आकस्मिक धनलाभ होगा, नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी, निजी कार्यों में खर्च होगा. **मिथुन**– प्रतियोगी परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन की संभावना, जीवनसाथी की भावनाओं का ध्यान रखें, भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा, **आत्म**– व्यवसाय मनोबल बना रहेगा. **कर्क**– लेनदेन की लेकर आप पर आरोप–प्रत्यारोप लगा सकते हैं, वाहन चलाने में सावधानी रखें, प्रियजनों से विवाद को टालें, व्यर्थ व्यय होगा.



सिंह

वृषभ



वृषभ

मिथुन



वृषभ

मिथुन



वृषभ

मिथुन



वृषभ

मिथुन



SUDOKU	7530				
3	9		1	4	2
1	2		6	3	5
		5	8	7	
7			6	9	
2	1		5		
4			3	2	
9			8	4	
	6		9	5	
8			1	7	
6	9	2	3	7	4
3	8	5	6	2	1
7	4	1	8	9	5
2	3	9	5	4	8
1	6	4	9	8	3
5	7	8	7	1	2
4	5	7	1	6	8
8	2	3	4	5	9
9	1	6	2	3	7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दो-कु 7529

6	9	2	3	7	4	5	8	1
3	8	5	6	2	1	7	4	9
7	4	1	8	9	5	6	2	3
2	3	9	5	4	6	8	1	7
1	6	4	9	8	3	2	6	5
5	7	8	7	1	2	9	3	4
4	5	7	1	6	8	3	9	2
8	2	3	4	5	9	1	7	6
9	1	6	2	3	7	4	5	8